दुनिया के रंग हज़ार

2010 अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष

आमोद कारखानिस

लेखों की इस कड़ी का नाम है – दुनिया के रंग हज़ार। क्या तुमको इस नाम में कुछ खटकता है? यह लेख जैवविविधता के बारे में बताता है यह तो इससे समझ आता है। पर दिक्कत "हज़ार" शब्द से है। यूँ तो हज़ार एक बड़ी संख्या लगती है पर जब बात जैवविविधता की हो तो यह संख्या कुछ भी नहीं। अब देखो न! दुनिया भर में पेड़ों की ही कोई एक लाख प्रजातियाँ हैं, ढाई लाख से ज़्यादा फूलदार पेड़ हैं, दस लाख से ज़्यादा कीट-पतंगे हैं....। क्या तुम ने कभी सोचा है कि इतनी विविधता कैसे आई होगी? जवाब आसान है... धीमे-धीमे। प्रकृति में इतनी विविधता पनपने में लाखों-लाख साल लगे हैं। यकीन नहीं होता? चलो इंसानी इतिहास के एक उदाहरण से इसे समझते हैं।

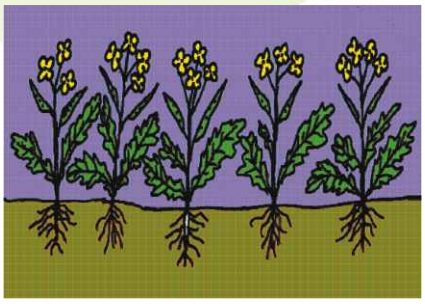

कुछ हज़ार साल पहले सरसों का एक पौधा था। लोग इसके अलग-अलग हिस्से खाते थे। कुछ लोगों को इसकी जड़ों का थोड़ा तीखा स्वाद अच्छा लगता था। तो उन्होंने सोचा होगा क्यों न इसे अपने खेत में उगाया जाए। उन्होंने देखा सभी सरसों के पौधे एक जैसे नहीं हैं। कुछ पौधों में तीखी स्वाद वाली जड़ थोड़ी बड़ी-मोटी है। बीज बोते समय उन्होंने उन्हीं पौधों के बीज चुने जिनकी जड़ बाकियों से ज़्यादा गूदेदार थी।

इस बार जो पौधे उगे उनमें थोड़ी ज़्यादा गूदेदार जड़ वाले पौधों की संख्या पहले से ज़्यादा थी। कुछ की जड़ें तो पहले वालों से भी ज़्यादा गूदेदार थीं। एक बार फिर उन्होंने ज़्यादा गूदेदार जड़ों वाले पौधों के ही बीज चुने।

किसानों की कई पुश्तें ऐसा करती रहीं। ऐसा करते-करते कई साल बाद हमें क्या मिला?

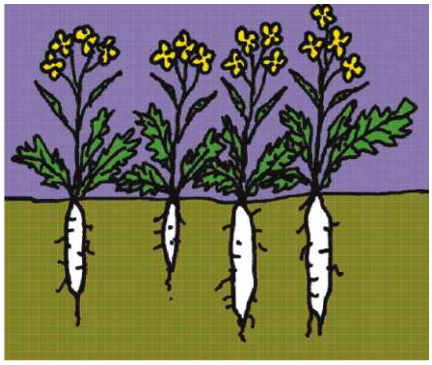

मूली!

किसानों के एक दूसरे समूह ने भी कुछ ऐसा ही किया। वे भी सरसों उगाते थे और उसके फूल खाते थे। उसमें भी कुछ पौधों में फूल थोड़े ज़्यादा थे। उन्होंने हर बार उन्हीं पौधों के बीज चुने जो ज़्यादा ऊँचे न थे और जिनमें ज़्यादा फूल थे। पुश्त-दर-पुश्त यही होता रहा। कई पुश्तों बाद हमें क्या मिला?

फूल गोभी!

इस तरह चुनिन्दा बीजों की बुआई से कई अलग-अलग किस्में मिलीं। केवल एक सरसों के पौधे से देखो हमें मूली और फूल गोभी के अलावा क्या-क्या मिला –

सरसों का साग
राई
सरसों का तेल
पत्ता गोभी
ब्रॉकली
शलगम
लाल मूली
वगैरह वगैरह...

प्रकृति में भी ऐसा ही होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि जैव-विकास की प्रक्रिया का कोई उद्देश्य नहीं होता है। वहाँ कोई सोचे-समझे तरीके से कोई खास गुण वाली किस्म नहीं चुनता। वे तो पर्यावरणीय स्थितियों की विभिन्नता के कारण खुद ब खुद चुनी जाती हैं।

हम जो अनाज खाते हैं वे भी तो मानव द्वारा चुनने की प्रक्रिया से गुज़रे हैं कभी। आज भी कई अनछुए जंगलों में चावल की जंगली किस्में मिल जाएँगी। उन्हीं से तो हम कितनी किस्में उगा पाए – ज़्यादा खुशबू वाली किस्में, ज़्यादा पोषक तत्वों वाली किस्में।

इस अंक के कुछ पन्नों में तुम चावल की कुछ किस्मों के बारे में जानोगे–